

SMT. LEKSHMIKUTTY

Smt. Lekshmikutty, is a traditional medicinal healer from the indigenous Kani tribal community of the Western Ghats in the Trivandrum district of Kerala. She with vast knowledge about the medicinal herbs of Western Ghats, is fondly known as 'Vanamuthassi' (Grandmother of the jungle in Malayalam)

2. Born on May 8, 1945, to Shri Chathadi Kani and Smt. Kunchudevi, Smt. Lekshmikutty did her study at the Govt. School Kallar, which she had to reach by walking 9 km through the jungle. She is the first girl from the tribal community in her area to go school fighting many social restrictions prevailed in that time. Being a girl and that too from the Tribal community, she had to face many difficulties but her mother a tribal healer herself supported Smt. Lekshmikutty in attaining education.

3. Smt.Lekshmikutty got the traditional medicinal knowledge from her mother and prepares as many as 500 herbal medicines from her memory and has helped cure thousands of people in a variety of diseases and snake and insect bites. She saved the life of more than 300 from snake bites and insects' bites alone and treated more than 1000 people for other diseases till now. Many patients came to her after being sent back by other forms of medicine.

4. Smt.Lekshmikutty, who is an authority in traditional medicinal wisdom and the folklore of Western Ghats, is also a well known poet and writer. She is a regular visitor and teaches at the Kerala Folklore academy. She also associates with the Jawaharlal Nehru Tropical Botanical Garden and Research Institute, Palode Trivandrum in the ethno botanical studies and in formulating medicinal drugs from traditional knowledge. Many research students in the area of ethno botany, traditional knowledge and folklore of various universities and institutes visit Smt.Lekshmikutty for her support. She is very happy in sharing her knowledge with the students, provided the study will help the poor man and thinks in that way also she can help the common man with her knowledge.

5. Smt.Lekshmikutty received number of awards and honours. She was awarded the "Nattu Vaidya Ratna" in 1995 by TBGRJ and FRLHT Bangalore. She is also a winner of Folklore Prize and till date received more than 35 awards and honours. In 2017 she was honoured by the Kerala State Biodiversity Board for her efforts in the protection of traditional medicinal knowledge.



श्रीमती लक्ष्मीकुट्टी

श्रीमती लक्ष्मीकुट्टी, केरल के त्रिवेंद्रम जिले के पश्चिम घाट के मूल कनी जनजातीय समुदाय की पारंपरिक वैद्य हैं। आपको पश्चिमी घाट की औषधीय जड़ी-बूटियों का वृहत ज्ञान है इसलिए लोग प्रेमपूर्वक इन्हें 'वनमुथासी" (मलयालम में जंगल की दादी) कहते हैं।

2. आपका जन्म 8 मई, 1945 को श्री छटादी कनी तथा श्रीमती कुंचु देवी के घर में हुआ। आपने सरकारी स्कूल कल्लार से अपनी शिक्षा प्राप्त की जहां आप जंगल के रास्ते से 9 किमी. चलकर पहुंचती थीं। उस समय प्रचलित कई सामाजिक प्रतिबंधों से लड़कर स्कूल जाने वाली आप अपने क्षेत्र के जनजातीय समुदाय की पहली लड़की थीं। लड़की होने, वह भी जनजातीय समुदाय की लड़की होने के कारण आपको कई मुश्किलों का सामना करना पड़ा किंतु आपकी मां, जो स्वयं एक जनजातीय वैद्य थीं, उन्होंने शिक्षा ग्रहण करने में आपका साथ दिया।

3. आपने पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान अपनी मां से प्राप्त किया और अपनी याददाश्त के आधार पर लगभग 500 हर्बल औषधियां तैयार कीं और विभिन्न बीमारियों सर्प या कीट के दंश से पीड़ित हजारों लोगों को ठीक होने में सहायता की। आपने अब तक सर्पदंश और कीटदंश से पीड़ित 300 से अधिक लोगों के प्राण बचाए हैं और अन्य बीमारियों से ग्रस्त 1000 से अधिक लोगों का उपचार किया है। आपके पास कई ऐसे मरीज भी आए हैं जिन्हें अन्य चिकित्सा पद्धतियों ने जवाब दिया था।

4. आप पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान तथा पश्चिमी घाट के लोक साहित्य की प्रकांड ज्ञाता हैं, आप एक कवि और लेखक के रूप में भी प्रख्यात हैं। आप केरल लोक साहित्य अकादमी में नियमित रूप से आमंत्रित रही और वहां अध्यापन भी किया। आपने एथनो बॉटनिकल शोध तथा पारंपरिक ज्ञान से औषधियां बनाने में जवाहर लाल नेहरू ट्रॉपिकल बॉटनिकल गार्डन एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट, पेलोडे त्रिवेन्द्रम को भी सहयोग प्रदान किया है। विभिन्न विश्वविद्यालयों और संस्थानों के एथनो बॉटिनी, पारंपरिक ज्ञान तथा लोक साहित्य के क्षेत्र में शोध कर रहे कई छात्र आपके पास सहयोग के लिए आते हैं। आप छात्रों के साथ अपना ज्ञान बांटकर आनन्दित होती हैं बशर्ते इस ज्ञान से गरीब लोगों का कल्याण हो और ऐसा सोचकर भी आप अपने ज्ञान से गरीब लोगों की सहायता कर सकती हैं।

5. आपको बहुत से पुरस्कार तथा सम्मान मिले हैं। आपको टी बी जी आर जे तथा एफ आर एल एच टी बंगलूरू द्वारा 1995 में "नट्टू वैद्य रत्न" पुरस्कार प्रदान किया गया। आप फोल्कलोर पुरस्कार की भी विजेता रहीं है और आपको अब तक 35 से अधिक पुरस्कार तथा सम्मान प्राप्त हुए हैं। परम्परागत चिकित्सीय ज्ञान के संरक्षण के आपके प्रयासों के लिए वर्ष 2017 में केरल राज्य जैवविविधता बोर्ड द्वारा आपको सम्मानित किया गया।